हृदयंगम करना है, जिस प्रकार अर्जुन ने साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण से सुन कर उसे धारण किया। यथार्थ में भाग्यशाली वही है, जो उसी शिष्य-परम्परा में स्वार्थप्रेरित मनमाने अर्थों के आरोप से मुक्त गीता का विशुद्ध ज्ञान अर्जित करता है। ऐसा भाग्यवान् वैदिक ज्ञान एवं विश्व के अन्य सभी शास्त्रों के स्वाध्याय का लंघन कर जाता है। गीता के अध्ययन से अन्य शास्त्रों का मर्म तो जाना जाता ही है; इसके अतिरिक्त, गीता में पाठक को वह तत्त्व भी प्राप्त है, जो अन्य किसी भी ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं है। यही गीता का अतुलनीय वैशिष्ट्य है। स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण के मुखारविन्द की वाणी होने के कारण गीता पूर्ण भागवत विद्या है।

महाभारत में वर्णित धृतराष्ट्र और सञ्जय का वार्तालाप इस महान् दर्शन का उपोद्‌घात है। यह सर्वविदित ही है कि इस दर्शन की अवतारणा कुरुक्षेत्र के युद्ध-प्रांगण में हुई, जो वैदिक युग के आदि काल से पवित्र तीर्थस्थान माना जाता है। पृथ्वी पर अपने अवतरणकाल में भगवान् श्रीकृष्ण ने मानव कल्याण के लिए इस कथामृत का प्रवचन किया।

धर्मक्षेत्र शब्द सारगर्भित है, क्योंकि कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में अर्जुन के पक्ष में भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं उपस्थित हैं। अपने पुत्र कौरवों की विजय के विषय में धृतराष्ट्र बड़ा संदिग्ध था। अतः सन्देह-निवारण के लिए उसके अपने सचिव संजय से जिज्ञासा की, 'मेरे तथा पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया?' वह जानता था कि उसके पुत्र तथा अनुज पाण्डु के पुत्र कुरुक्षेत्र की रणभूमि में निर्णयात्मक युद्ध के लिए एकत्रित हुए हैं। फिर भी, उसकी जिज्ञासा तात्पर्ययुक्त है। धृतराष्ट्र नहीं चाहता कि उसके पुत्रों और भतीजों में सन्धि हो। वह तो केवल युद्धस्थल में संघर्ष के लिए सन्नद्ध अपने पुत्रों की कुशल के विषय में आश्वस्त होना चाहता था। युद्ध का आयोजन कुरुक्षेत्र में हुआ था, जिसे वेदों में देवोचित तीर्थस्थान कहा गया हैं। इस कारण, युद्ध के परिणाम पर उस शाश्वत् पवित्र स्थान का क्या प्रभाव होगा, इस आशंका से धृतराष्ट्र भयभीत हो गया। वह जानता था कि इसका प्रभाव अर्जुन आदि पाण्डवों के अनुकूल होगा, क्योंकि वे स्वभाव से ही सदाचारी थे। संजय श्रीवेदव्यासजी का शिष्य था। उनके अनुग्रह से धृतराष्ट्र के कक्ष में बैठे-बैठे उसे कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि का दर्शन हो सका। अतएव धृतराष्ट्र ने युद्ध-स्थिति के सम्बन्ध में उसीसे जिज्ञासा की।

पाण्डव एवं धृतराष्ट्र-पुत्र, दोनों एक ही कुल की सन्तान हैं। परन्तु धृतराष्ट्र के वाक्य से उसका मनोभाव प्रकट होता है। उसने जान-बूझकर केवल अपने पुत्रों को कुरुवंशी कहकर पाण्डवों को कौटुम्बिक उत्तराधिकार से वंचित किया है। इस प्रकार अपने भतीजे पाण्डवों के सम्बन्ध में धृतराष्ट्र का दुर्भाव स्पष्ट है। जिस प्रकार धान के खेत से खर-पतवार को निकाल कर फैंक दिया जाता है, उस के अनुरूप इस कथा के उपक्रम से ही यह आशा है कि धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में, जहाँ धर्म के जन्मदाता भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं विराजमान हैं, धृतराष्ट्र-पुत्र दुर्योधन आदि का नाश होगा और युधिष्ठिर आदि धर्म-परायण जनों को श्रीकृष्ण स्वयं स्थापित करेंगे। धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र